पंजीयन क्रं. 06/09/01/04737/04

विचार मासिक पत्रिका

कुल पृष्ठ 24, वर्ष 4, अंक 40 माह - जुलाई 2022, मूल्य - निःशुल्क

आपके विकास को समर्पित

॥विचार समिति॥

(स्थापना वर्ष 2003)

मंगलगिरि में विचार समिति से इंटर्नशिप कर रहे छात्र-छात्राओं द्वारा पौधारोपण

पदाधिकारी

कपिल मलैया
संस्थापक व अध्यक्ष
मो. 9009780020

सुनीता जैन
कार्यकारी अध्यक्ष
मो. 9893800638

सौरभ रांधेलिया
उपाध्यक्ष
मो. 8462880439

आकांक्षा मलैया
सचिव
मो. 9165422888

विनय मलैया
कोषाध्यक्ष, मो. 9826023692

नितिन पटैरिया
मुख्य संगठक, मो. 9009780042

अखिलेश समैया
मीडिया प्रभारी, मो. 9302556222

हरगोविंद विश्व
मार्गदर्शक

राजेश सिंघई
मार्गदर्शक

श्रीयॉश जैन
मार्गदर्शक

गुलझारीलाल जैन
मार्गदर्शक

प्रदीप रांधेलिया
मार्गदर्शक

अंशुल भार्गव
मार्गदर्शक

विचार समिति का मासिक प्रकाशन

विचार मासिक पत्रिका

वर्ष - 4, अंक - 40, जुलाई - 2022

संपादक

आकांक्षा मलैया

प्रबंधक व प्रकाशक

विचार समिति

स्वामित्व

विचार समिति

258/1, मालगोदाम रोड, तिलकगंज वार्ड,
आदिनाथ कार्स प्रा. लिमि.
के पीछे, सागर (म.प्र.)
पिन - 470002
Email: sanstha.vichar@gmail.com
Phone: 9575737475
07582-224488

मुद्रण

तरूण कुमार सिंघई, अरिहंत ऑफसेट
पारस कोल्ड स्टोरेज, बताशा गली,
रामपुरा वार्ड, सागर (म.प्र.)
पिन - 470002

इस अंक में

1. मिट्टी बचेगी तो जीवन बचेगा 4

2. समिति द्वारा सद्गुरू को गाय के गोबर से निर्मित दिये भेंट 6

3. माहवारी स्वच्छता अभियान : सेनेटरी पैड की जगह मेस्टुअल कप इस्तेमाल की सलाह 7

4. राजस्थान, नेपाल, असम, महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार से आए इंटर्न ने मंगलगिरि में किया वृक्षारोपण ... 8

5. सस्टेनेबल डेवलपमेंट के लक्ष्यों पर वर्चुअल माध्यम से हुई परिचर्चाएं

(A) दैनिक जीवन में लैंगिक असमानता 10

(B) पानी की समस्याएं एवं उपाय 11

(C) भुखमरी की समाप्ति 12

(D) समानता एवं समावेश 12

(E) परिणाम आधारित निगरानी मूल्यांकन एवं अभिसंस्करण पर परिचर्चा 13

(F) संस्थाओं में प्रभाव आकलन 13

6. आत्म निर्भर किशोर परियोजना का उद्देश्य विद्यार्थियों के विकास और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है 14

7. समिति का लक्ष्य बुंदेलखंड के समग्र विकास को पूरा करता है 15

8. स्व-सहायता समूह सशक्तिकरण................. 16

9. गोमय दिया परियोजना का आकलन 17

10. निःशुल्क स्वास्थ्य कार्ड एवं जागरूकता 18

11. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्रों की एक माह की इंटर्नशिप हुई पूर्ण 19

12. एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह सीड बॉल की तीसरी वर्षगांठ 20

13. विचार समिति के सहयोगी और समर्थक संस्थान 21

मीडिया कवरेज :- 22

मिट्टी बचेगी तो जीवन बचेगा

सद्‌गुरू
(जग्गी वासुदेव जी)
वीडियो से लिया गया मिट्टी बचाओ अभियान का संदेश

मिट्टी का बेहतर स्वास्थ्य और उसमें बेहतर गुणवत्ता होना बहुत जरूरी है, मिट्टी ही वह जगह है जिसमें अनेक जीव जंतु रहते हैं उन सूक्ष्म जीवों के कारण ही मिट्टी में सब पनपता हैं। हमें भोजन मिलता हैं, सभी जीव जंतु जीवित रहते हैं। भारत के सन्दर्भ में देखा जाये तो बारह महीने खेती की जाती है। देश की बड़ी आबादी इस क्षेत्र में कार्यरत है। इसके अलावा इस देश की अर्थव्यवस्था में भी अतुलनीय योगदान है। इसका तात्पर्य है कि मिट्टी स्वस्थ एवं स्वच्छ है। जब मिट्टी अच्छी नहीं रह जाएगी और अगर देखा जाए तो हमने मिट्टी को विभिन्न रूप से खराब कर दिया है। मिट्टी की आज इस वर्तमान दुर्दशा के लिए मानवीय गतिविधियां जिम्मेदार है। हम लगातार देख रहे हैं कि इस भूमंडल का सबसे महत्वपूर्ण तत्व मिट्टी का स्वास्थ्य निरंतर बिगड़ता चला जा रहा है, जो हमारे लिए और हमारी पीढ़ियों के लिए बेहद भयावह होगा। हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि मिट्टी की ऊपरी परत केवल हिस्सा नहीं, बल्कि मानवीय जीवन की शैली को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण तत्व है। हम पर्यावरण, कार्बन डाइऑक्साइड, प्रदूषण आदि कई मुद्दों पर बात करते हैं इन सभी के पहले हमें सबसे बड़ी समस्या को समझना होगा और उसका समाधान निकालना होगा। आज मानवीय मुद्दों को पर्यावरणीय मुद्दों के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। आज अगर प्लास्टिक है, पॉलीथिन है, हवा में कॉर्बन मोनोऑक्साइड है, नदियां प्रदूषित, कचड़े के ढेर है, तो वह मनुष्यों की वजह से ही हैं। अगर सही तरीके से जागरूकता के साथ कानून बनाए जाएं तो इस समस्या से निपटा जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य व कृषि संगठन (FAO) ने मिट्टी पर चिंता जताई है। कृषि मिट्टी में, माइक्रोप्लास्टिक के लघु कण कहीं ज़्यादा बड़ी मात्रा में समाए हुए हैं। वर्ष 2015 तक, लगभग छह अरब 30 करोड़ टन प्लास्टिक का उत्पादन हुआ, उसमें से लगभग 80 प्रतिशत प्लास्टिक का निपटान सही तरीक़े से नहीं हुआ है। विशेषज्ञों का मानना है दुनिया की लगभग एक तिहाई की मिट्टी की गुणवत्ता खराब होती जा रही है। आज जितनी खेती की मिट्टी बची हुई है

सिर्फ कुछ दशकों तक मौजूद रहेगी। उन्होंने इसे मिट्टी का विनाश कहा है।

हमने सुना है पिछली सदियों में कितने विशालकाय जीवो का अंत हो चुका है। यह एक तरह की आत्महत्या है। संभावना है कि अगले 20 से 50 सालों में आज के मुकाबले 30 प्रतिशत भोजन की कमी होगी। इसके परिणाम स्वरूप दुनिया में दुख, गरीबी, लूटमार का माहौल बनेगा। इससे सभी वर्ग प्रभावित होंगे। यह चिंता का विषय नहीं बल्कि समझने की जरूरत है कि मिट्टी का क्या हो रहा है? यह कहां जा रही है?

अगर मिट्टी में ऑर्गेनिक सामग्री मिला दें तो मिट्टी बन जाती है और अगर यह पदार्थ निकाल दे तो रेत बन जाती है। अगर हम वर्षा वन में जाएं तो जैविक मिट्टी का प्रतिशत 60 से 70 होगा। खेती की मिट्टी में जैविक सामग्री 3 से 6 प्रतिशत होनी आवश्यक है। लेकिन अब उस मिट्टी मे जैविक सामग्री 0.5 प्रतिशत से कम है। वाकई मिट्टी रेगिस्तान बनने की ओर अग्रसर है और यह पूरी दुनिया में हो रहा है। जिस तरह मिट्टी में कीटनाशकों, खरपतवार नाशकों का उपयोग हो रहा है उसका मिट्टी पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ रहा है। खेती, जंगलों की कटाई और दूसरी कई वजहों से ऊपरी मिट्टी बहुत तेज़ी से खराब और नष्ट हो रही है। विश्व स्तर पर, 52 प्रतिशत खेती की भूमि पहले ही खराब हो चुकी है। धरती संकट में है। यदि मिट्टी इसी तेजी से खराब होती रही, तो इस धरती पर जीवन का अंत हो जाएगा।

लगभग हर बड़ा पर्यावरण का संकट, कुछ हद तक, मिट्टी की क्वालिटी के खराब होने का ही एक परिणाम है। इसी तरह, पर्यावरण से संबंधित लगभग हर समस्या को मिट्टी को स्वस्थ बनाकर सुलझाया जा सकता है।

यह सोचना वाकई एक भ्रम है कि हम अपने पर्यावरण के किसी एक पहलू को बाकी पहलूओं से अलग मानकर, उससे जुड़ी समस्याएं सुलझा सकते हैं – क्योंकि पर्यावरण तंत्र का कोई भी पहलू दूसरे पहलूओं से अलग रहकर कार्य नहीं करता।

कोई समाधान तब तक पूरा नहीं होगा, जब तक हम इस बारे में जागरूक नहीं हो जाएंगे कि हर जीव आपस में जुड़ा हुआ है, सभी का जीवन आपसी एकजुटता के साथ घटित हो रहा है। कई मायनों में मिट्टी वह मंच है जिस पर जीवन पनपता है। अगर हम मिट्टी को ठीक करते हैं, तो हमारे पास जीवन के हर पहलू को ठीक करने का सबसे अच्छा मौका होगा।

समिति द्वारा सद्गुरू को गाय के गोबर से निर्मित दिये भेंट

सद्गुरू के सागर आगमन पर समिति ने उन्हें गोबर से बने दिये भेंट किए।

सद्गुरु बहुत से लोगों के लिए बहुत सारी भूमिकाओं में हैं, गुरु, रहस्यवादी, योगी, मित्र, ज्ञात (और अज्ञात) सभी विषयों पर सलाहकार, कवि, वास्तुशिल्पी उनके बहुत से चेहरे, बहुत सारे रूप हैं। भारतीय आध्यत्मिक गुरु, पर्यावरणविद् सद्गुरु मिट्टी को बचाने के लिये जागरूकता अभियान की शुरुवात की है। 'जर्नी टू सेव सॉइल' नामक इस अभियान में सद्गुरु 100 दिनों की यात्रा अकेले ही बाइक पर कर रहे हैं। 30000 किलोमीटर की यात्रा के दौरान सद्गुरु यूके, यूरोप और मिडिल-ईस्ट से होते हुये भारत तक 27 देशों से गुजरे हैं। मिट्टी बचाओ अभियान की यह यात्रा गुरुवार को भैंसा नाका, शासकीय स्कूल के पास पहुंची। सभी नगरवासियों ने सद्गुरु का अभिवादन कर स्वागत किया। सद्गुरू ने आने वाले संकट के प्रति आगाह करते कहा हम मिट्टी के विनाश की कगार पर हैं। मिट्टी को बचाने के एक बहुत बड़ी मुहिम चलाने की आवश्यकता है अगर हम मिट्टी को ठीक करते हैं, तो हमारे पास जीवन के हर पहलू को ठीक करने का सबसे अच्छा मौका होगा। उन्होंने जोर देते हुए कहा हमारी वर्तमान गतिविधियां ही भविष्य तय करेंगी। इस अवसर पर समिति द्वारा सद्गुरू को गाय के गोबर से निर्मित दिये भेंट किये। इस अवसर पर समिति सचिव आकांक्षा मलैया, समिति कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत, कोषाध्यक्ष विनय मलैया, मुख्य संगठक नितिन पटैरिया एवं मोहल्ला विकास के सदस्यों के साथ मिट्टी बचाओ अभियान का हिस्सा बनें ।

माहवारी स्वच्छता अभियान : सेनेटरी पैड की जगह मेंस्ट्रुअल कप इस्तेमाल करने की सलाह

लिवफ्रेश आनंदा एवं विचार समिति के संयुक्त तत्वाधान में माहवारी स्वच्छता अभियान का शुभारंभ हुआ। वर्चुअल माध्यम से एक दिवसीय परिचर्चा में महिलाओं के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए मेंस्ट्रुअल कप की उपयोगिता पर लिवफ्रेश आनंदा सह संस्थापक निकिता गाला पारेख और जिगर पारेख ने जानकारी दी।

पारेख ने मासिक धर्म के दौरान किए जाने वाले सेनेटरी नैपकिन अन्य चीजों के इस्तेमाल से होने वाली हानियों एवं संभावित रोगों से परिचय करवाया। जिसमें हार्मोनल डिसफंक्शन, एलमेंट्स रिलेटेड, मैलफंक्शनिंग, सूजन, अंडाशय के कैंसर आदि समस्याएं आती हैं।

उन्होंने तथ्यात्मक जानकारी देते हुए बताया कि भारत में लगभग 57.6 प्रति. महिलाएं सेनेटरी नैपकिन का इस्तेमाल करती हैं। पैड का सही तरीके से निष्पादन न होने से प्राकृतिक रूप से बहुत नुकसान हो रहा है। इस्तेमाल होने वाले पैड के प्लास्टिक को सड़ने में 500 से 800 साल लग सकते हैं। क्योंकि इसमें इस्तेमाल किए जाने वाला नॉन -बायोडिग्रेडेबल जो स्वास्थ्य और पर्यावरण को खतरा हो सकता है। सेनेटरी पैड जैव खतरों से संबंधित है। इसे जलाया भी नहीं जा सकता। सेनेटरी पैड को जलाने से हानिकारक टॉक्सिन्स निकलते हैं जो

नजदीकी लोगों के लिए गंभीर स्वास्थ्य जोखिम पैदा करते हैं। उचित सावधानियों के बिना यह केवल प्रदूषण की ओर ही नहीं बल्कि गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं भी पैदा कर करता है। इन सभी को बदलने के लिए सेनेटरी पैड की जगह मेंस्ट्रुअल कप इस्तेमाल करने की सलाह दी।

कप की खूबियां बताते हुए उन्होंने कहा यह 100 प्रतिशत मेडिकल ग्रेड सिलिकॉन सामग्री से बना हैं। उच्च योग्य द्वारा उत्पादित और परीक्षण पूर्ण के बाद कप को 5 वर्षों तक उपयोग किया जा सकता है। किसी भी प्रकार के कार्य को बहुत ही आसानी के साथ किया जा सकता है।

इस कार्यक्रम में समिति की कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत, सचिव आकांक्षा मलैया व समिति सदस्यों के साथ इंटर्न एवं अन्य प्रतिभागी शामिल रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ समिति इंटर्न आसीना बराल ने किया।

राजस्थान, नेपाल, असम, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, गुजरात और बिहार से आए इंटर्न ने मंगलगिरि पहाड़ी पर किया वृक्षारोपण

विचार समिति में देश के कई राज्यों से आए छात्र-छात्राएं कर रहे इंटर्नशिप

दक्षा शर्मा, राजस्थान | आसीना बराल, नेपाल | सुरभि देवनाथ, असम | चंद्रशेखर वी. भिसे, महाराष्ट्र | पवन चव्हाण, महाराष्ट्र | विपुल तिवारी, उत्तर प्रदेश | आशीष ठाकुर, गुजरात | शिवंकुमार तिवारी, बिहार

समर इंटर्नशिप में पूरे देश से आये छात्र-छात्राओं जो सागर विकास के लिए समर्पित समिति के मॉडल 360 डिग्री विकास आधारित विभिन्न परियोजनाओं को आगे बढ़ाने पर रिसर्च कर रहे हैं। इंटर्नशिप कर रहे छात्र-छात्राओं ने बताया कि प्रतिवर्ष 1972 से 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता हैं। दुनिया भर में लोगों के बीच पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, ग्रीन हाउस के प्रभाव, ग्लोबल वार्मिंग आदि ज्वलंत मुद्दों और इनसे होने वाली विभिन्न समस्याओं के प्रति सामान्य लोगों को जागरूक करना है एवं पर्यावरण की रक्षा के लिए हर संभव प्रयास करना है।

टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस से आए हुए छात्र पवनकुमार चव्हाण (महाराष्ट्र), आसीना बराल (नेपाल), आशीष ठाकुर (गुजरात), चंद्रशेखर वी. भिसे (महाराष्ट्र), बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से दक्षा शर्मा (राजस्थान), सुरभि देवनाथ (असम), विपुल तिवारी (उत्तर प्रदेश), शिवं कुमार तिवारी (बिहार) हैं।

विचार समिति की सचिव आकांक्षा मलैया

मंगलगिरी में समिति सचिव आकांक्षा मलैया के साथ इंटर्नशिप कर रहे बच्चों ने किया पौधारोपण।

ने कहा कि शुद्ध पर्यावरण पर ही मानव जीवन आश्रित है। पर्यावरण का ध्यान रखना हम सभी का कर्तव्य है। समिति कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने समिति द्वारा पर्यावरण संरक्षण में सीडवॉल प्लांटेशन के माध्यम से एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह सीडवॉल, मंगलगिरि पहाड़ी पर 9000 पौधे जो वर्तमान में वृक्षों का रूप ले रहे है, 10वीं विसबल बटालियन मकरोनिया आदि अन्य स्थानों पर वृक्षारोपण की जानकारी दी। उन्होंने कहा समिति पर्यावरण को बचाने की मुहिम पर कार्य कर रही है। विश्व पर्यावरण दिवस पर्यावरण को समर्पित यह दिन है। हम सभी को अधिक से अधिक मात्रा में पौधे लगाकर उनका ध्यान रखना चाहिए। समिति सहायक मुकेश कुमार जैन, एडवोकेट अभिलाषा जाटव, राहुल जाटव, समिति सदस्य राहुल अहिरवार, विनय चौरसिया, जवाहर दाऊ, माधव यादव, श्रीकांत, अरविंद, पूजा लोधी, पूजा प्रजापति, भाग्यश्री राय, ज्योति दीदी ने आम, नीम, जामुन, आंवला, जासुन आदि के पौधे रोपे।

सस्टेनेबल डेवलपमेंट के लक्ष्यों पर वर्चुअल माध्यम से हुई परिचर्चाएं

विचार समिति ने छह बेविनार के माध्यम से सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल (एसडीजी) के लक्ष्यों दैनिक जीवन में लैंगिक असमानता, पानी की समस्याएं एवं उपाय, भुखमरी की समाप्ति, समानता एवं समावेश के मुद्दों पर विशेषज्ञों ने विचार रखे।

दैनिक जीवन में लैंगिक असमानता

सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल (एसडीजी) एक संगठन है जिसके अंतर्गत 17 लक्ष्य आते हैं। लैंगिक समानता उन्हीं लक्ष्य में से एक है। इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं को निर्णय लेने में समान भूमिका प्रदान करना साथ ही महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना है।

फीफी सह संस्थापक शुभिका ने लैंगिक समानता के मुद्दे पर तथ्यात्मक जानकारी देते हुए कहा महिलाओं की राष्ट्रीय संसद में भागीदारी 25.6 प्रतिशत तथा महिलाओं को स्थानीय सरकार में प्रतिनिधित्व 36.3 प्रतिशत, शासकीय पदों पर 28.2 प्रतिशत है जो दर्शाता है कि महिलाओं के साथ अभी भी गैरबराबरी को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अगर आंकड़ों को देखा जाये तो 3 में से एक महिला के साथ कहीं न कहीं शारीरिक रूप से हिंसा, यौन हिंसा, मानसिक हिंसा का शिकार हुई हैं।

आज भी बालविवाह, भ्रूण हत्या आदि जैसी कुप्रथा इस समाज में मौजूद हैं। हम अगर तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो घरेलू कार्य के साथ पुरषों के मुकाबले 26 गुना अधिक महिलाएं कार्य करती हैं। जिसका न तो उन्हें कोई वेतन मिलता है न ही कोई हिस्सेदारी। शुभिका ने महिलाओं की पूर्ण भागीदारी के साथ समान

अवसर पर जोर दिया। जिसमें समान रूप से कार्य करने की भागीदारी, समान वेतन के साथ राजनीतिक हिस्सेदारी में आर्थिक पक्ष शामिल हैं। वेबिनार के माध्यम से उन्होंने कहा लैंगिक समानता न केवल एक मौलिक अधिकार है बल्कि एक शांतिपूर्ण, समृद्ध और टिकाऊ दुनिया के लिए आवश्यक आधार है।

महिलाओं एवं लड़कियों की शिक्षा, देखभाल, स्वास्थ्य, राजनीतिक एवं आर्थिक अधिकार, निर्णय लेने की प्रक्रिया में समान प्रतिनिधित्व प्रदान करने से स्थाई अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा मिलेगा। जिससे बड़े पैमाने पर समाज और मानवता को लाभ होगा। विशाखा जी के मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम संपन्न हुआ।

पानी की समस्याएं एवं उपाय

विचार समिति के द्वारा आयोजित एसडीजी लक्ष्यों में पानी की समस्याएं एवं उपाय पर व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत जल संकट और समाधान शीर्षक रखते हुए कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम की प्रमुख वक्ता डॉ. सुहासिनी भटनागर ने व्याख्यान के आरंभ में सतत् पोषणीय विकास के मुख्य बिन्दु जिसमें जीवन के सभी रूपों की उचित देखभाल करना, मानव जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि करना, प्राकृतिक संसाधनों के ह्रास को कम से कम करना, विभिन्न समुदायों को अपने पर्यावरण की देख-भाल करना, पृथ्वी पर जीवन की विविधता को बनाये रखना आदि। वक्ता के अनुसार वर्तमान एवं भविष्य दोनों की आवश्यकताओं पर ध्यान देना चाहिए। संसाधनों की कमी के कारण सतत् पोषणीय विकास पर ध्यान देना आज के समय की मांग है। तत्पश्चात वक्ता ने वर्तमान समय में अप्रासंगिक हो गए मुद्दे 'जल की कमी' पर प्रकाश डाला।

पृथ्वी पर उपलब्ध अधिकतर जल में नमक होने के कारण पीने योग्य नहीं है। अत: पीने योग्य जल की अत्यंत कमी है। आने वाले समय में यह स्थिति और खराब हो सकती है। पानी से सम्बंधित समस्याओं को सुलझाने मात्र से संयुक्त राष्ट्र के द्वारा सतत् पोषणीय विकास के विभिन्न लक्ष्यों को पूरा किया जा सकता है। भारत में पानी की समस्या में लगातार वृद्धि हो रही है। भूमिगत जल के

स्तर में भी लगातार गिरावट हो रही है।

जल से संबंधित समस्याओं का और अधिक परिचय देने के लिए वक्ता ने गाजियाबाद एवं कानपुर का उदाहरण दिया। सभी उद्योगों में पानी की अत्यंत आवश्यकता है। उद्योगपतियों को इस समस्या की जिम्मेदारी लेनी चाहिए, क्योंकि राष्ट्र की नदियों को प्रदूषित करने में उनका भी बड़ा योगदान है। कानपुर इत्यादि नगरों के कूड़े एवं औद्योगिक गंदगी के कारण गंगा जैसी महत्वपूर्ण नदियां विकट प्रदूषण का शिकार हो रही है। कैल्शियम, मैग्निशियम, कॉपर, मेटल आदि के कारण जल प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। डॉ. सुहासनी ने अपने व्याख्यान में बायोरेमेडीएशन आधारित विधि पर चर्चा की जिससे रसायनों को अलग कर दिया जाता है। विविध महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डालते हुए डॉ. सुहासिनी ने अपने व्याख्यान का समापन किया। कार्यक्रम का संचालन विशाखा जी ने किया।

भुखमरी की समाप्ति

संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव बानकीमून ने 2012 में भुखमरी की समाप्ति अभियान की शुरुआत की थी। जिसका उद्देश्य 2030 तक पूरे विश्व में भुखमरी की समस्या से निजात पाना है। आज भी लगभग दुनिया की 9 प्रतिशत आबादी कुपोषण का शिकार है जिसमें कुछ लोगो को तो खाना मिल ही नहीं रहा है। अगर मिल भी रहा है तो संतुलित आहार नहीं मिल रहा। 1 से 5 वर्ष के बच्चों में 22 प्रतिशत बच्चे ऐसे है जिनकी औसतन ऊंचाई जितनी होनी चाहिए थी उससे कम है। विश्व में लगभग 43.2 प्रतिशत लोग ऐसे है जिन्हें खाद्य सामग्री नियमित उपलबध नहीं हो पाती। विश्व में हर चौथा व्यक्ति भुखमरी से प्रभावित है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा और संतुलित मात्रा में आहार लेना आवश्यक है। वक्ता ने कहा हमे भुखमरी के बारे जानना है तो उस आखिरी व्यक्ति तक खाना पहुंचाना होगा जो भूख से प्रभावित है। भोजन में सभी तत्व जैसे प्रोटीन, कैल्शियम, विटामिन भरपूर मात्रा में है अथवा नहीं? इन पोषक तत्वों कमी है तो इस पर कार्य करना आवश्यक है।

समानता एवं समावेश

समानता एवं समावेश यह दो आयाम भारतीय संस्कृति के मिले जुले स्वरुप है। भारतीय संस्कृति विविधता में एकता के रूप को कहीं भी महसूस किया जा सकता है, आज भी हमारे समाज में भेदभाव पूर्णत: समाप्त नहीं हुआ है। समानता का अर्थ सिर्फ सबको समान अवसर प्रदान करना नहीं बल्कि अवसरों के लिए सभी में योग्यताओं को बढ़ावा देना तथा कुशल बनाना है। एक सतत् प्रयास के साथ ही समानता के उद्देश्य को हासिल कर सकते हैं। सर्वसमावेशी, इस विविधता पूर्ण समाज में किसी भी एक घटक के कम रह जाने से समाज को विघटित नहीं होने देना यह एक प्रकार से समावेशिता है। किसी भी कार्यस्थल पर एक विविधता पूर्ण समूह अच्छे प्रकार से तथा अच्छे ढंग से कोई भी लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। इसी के लिए कार्यस्थल एवं शिक्षा संस्थानों को सर्वसमावेशक होना जरूरी है। सर्वसमावेशिता के अलग-अलग मानक हो सकते हैं जैसे लैंगिक समावेशिता और सांस्कृतिक समावेश दोनों एक प्रकार से जरुरी है। दोनों मूल्यों को सभी स्तरों तक पहुंचाने के लिए प्रत्येक संगठन अपने स्तर पर कार्य करता रहता है। यह एक अच्छी तरह से स्थापित तथ्य है कि जो संगठन या संस्था विविधता एवं समान अवसर वाली कार्यस्थलों के लिए प्रयत्न कर रहा है या जिन संस्थानों ने इस कार्य किया है और जो संस्थान इस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं उनमें प्रत्यक्ष रूप से तुलनात्मक अंतर दिखलाई पड़ता है।

परिणाम आधारित निगरानी मूल्यांकन एवं अभिसंस्करण पर परिचर्चा

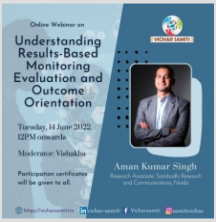

समिति द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला में सम्बोधी रिसर्च एंड कम्युनिकेशन के सहायक शोधकर्ता अमन कुमार सिंह ने प्रभाव आकलन एवं शोध प्रतिक्रिया पर सामान्य चर्चा के साथ कार्यक्रम को सम्बोधित किया।

संस्थाओं के लिए उन्होंने परियोजनाओं से संबंधित नीतियां, विश्लेषण के साथ परियोजना से संबंधित सभी आंकड़ों को एकत्रित करके उनका विश्लेषण एवं निरीक्षण करना। नियमित अवधि के पश्चात हर योजना की उपलब्धि एवं उसकी समस्याओं की जानकारी प्राप्त करना। किसी भी कार्य अवधि के समय में निगरानी कार्यान्वयन से पहले, उसके दौरान या बाद में हो सकता है। मूल्यांकन की प्रक्रिया में लोगों के जीवन में आए बदलावों का व्यवस्थित मूल्यांकन शामिल होना चाहिए। नियोजित प्रविधियों के माध्यम से परिवर्तन के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पक्षों का होना चाहिए। मूल्यांकन प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारकों को समझना चाहिए। उन्होंने गुणात्मक एवं अंकात्मक दोनों प्रकार की जानकारी दी।

तक्षा फाउंडेशन के संस्थापक विवेक सिंह ने बताया कि भारत जैसे विकासशील देश में संस्थाओं में प्रभाव आकलन की आवश्यकताओं पर ध्यान देना चाहिए जिसमें परियोजना प्रभाव, आकलन को धरातल पर उतारा जा सके। आयोजन की मध्यस्थता विशाखा जी ने की।

Webinar of Vichar Samiti

S No	Name	Webinar Topic	Date & Time
1	**Vivek Singh** Founder, Taksha Foundation chief Recearcher, Policy Research Foundation Ph.D Scholar (Department : Public Policy)	Importance of Monitoring and Impact Evaluation for an NGO in a Develiping Nation Like India	4 June 2022 4-5 PM
2	**Shubhika** Co-Founder & CEO, FIFE	Gender In Our Daily Lives	13 June 2022 12:00 PM
3	**Aman Kumar Singh** Research Associate Sambodhi Research & Communications , Noida	Understanding Results-Based Monitoring Evaluation and Outcome Orientation	14 June 2022 12:00 PM
4	**Dr. Suhasini Bhatnagar** Ph.D in Medical Genetics	Water: Why the Crisis and the Solutions	15 June 2022 1-2 PM
5	**Nikita Gala Parekh** Co-Founder Lyvefresh Ananda	Transition to a better period	15 June 2022 4-5 PM
6	**Sarita Mehra Pandey** CA, Corporate Trainer Founder of Immerge Sculpt Studio	Equality and Inclusiveness	17 June 2022 3-4 PM

आत्म निर्भर किशोर परियोजना का उद्देश्य विद्यार्थियों के विकास और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है

आत्म निर्भर किशोर परियोजना का उद्देश्य प्रत्येक बालक/ बालिकाओं में जन्मजात प्रतिभाएं, रुचियां, प्रवृत्तियां होती हैं जो उचित वातावरण न मिलने से जीवन भर प्रभावित करती हैं।

आत्म निर्भर किशोर परियोजना से उनके व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देना, उनके जीवन को संतुलित बनाना हैं। जिसके परिणामस्वरुप शुरुवाती स्तर से आत्मविश्वास, रोजगार प्राप्त, उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार होगा। उन्हें जीवन में आगे बढ़ने में सहयोगी होगा। आधुनिक युग में बुनियादी आवश्यकताएं लगातार बढ़ती जा रही हैं। इन आवश्यकताओं को पूरा करना एक संतुलित जीवन बनाना, आत्म निर्भर किशोर परियोजना का महत्वपूर्ण बुनियादी पक्ष है। इस परियोजना के तहत तीन मुख्य बिन्दुओं पर कार्यन्वयन किया जाएगा।

1. विचार समिति लाइनर हब– लाइनर हब के माध्यम से स्कूली छात्रों के व्यक्तित्व विकास, भाषाओं का ज्ञान, नए क्षेत्रों को जानने के लिए प्रेरित करना।

2. अनटोल्ड स्टोरी– सभी बच्चे कल्पनाशील होते हैं उनकी कल्पनाओं को सकारात्मक रूप देने के लिए अनटोल्ड स्टोरी लिखने हेतु प्रेरित करना।

3. लेखन– लेखन भावनाओं, विचारों को मूर्त स्वरूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण होता है। बच्चों को लेखन हेतु प्रेरित करना।

इस परियोजना में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, सक्रिय नागरिक एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयास किया जायगा। इस परियोजना का लक्ष्य विद्यालयों में सामाजिक परिवर्तन लाना है। परियोजना अंतर्गत स्कूल छोड़ने वाले बच्चों को शामिल किया जाएगा। इस परियोजना में कनिका जी द्वारा ट्रेनिंग दी जा रही है। इस परियोजना पर इंटर्न आसीना बराल ने कार्य किया।

समिति का लक्ष्य बुंदेलखंड के समग्र विकास को पूरा करता है

समिति की पूर्व एवं वर्तमान में संचालित सभी परियोजनाएं जैसे अंत्योदय शिक्षा प्रेरक, आर्ट कैंप, गोबर दिया परियोजना, पौधरोपण, सीडवॉल द्वारा वृक्षारोपण, मियावाकी पद्धति से वन, जैविक खेती, ब्लड डोनेशन कैंप, स्वास्थ्य शिविर, माहवारी से संबंधित, स्वच्छता, कोरोना से संबधित परियोजनाएं, हथकरघा, स्व-सहायता समूह, 17 किलोमीटर तिरंगा यात्रा, नेकी का घर आदि 40 तरह की परियोजनाओं की जानकारी इकट्ठी की। इसके अलावा सोशल मीडिया पर कार्य किया जा रहा है। जमीनी स्तर पर गोबर दिया परियोजना के तहत मोहल्ला विकास योजनाओं की महिलाओं से मुलाकात कर दिए बनाने की प्रक्रिया को जाना। तिलकगंज निवासी रचना पटेल से चर्चा में पूछा कि इसके पूर्व क्या करती थी? उन्होंने बताया गोबर दिए बनाने के पूर्व उनके घर कार्य के अलावा अन्य कोई कार्य नहीं था, जो उनके लिए आय का जरिया बन सके। साथ ही सामाजिक माहौल अभी इतना अच्छा नहीं हैं, कि अन्य जगहों पर जाकर कार्य कर सकें। गोबर के दिया से घर बैठे ही 800 से 900 रुपये प्रतिदिन कमा सकते हैं। यह सभी जानकारी सोशल मीडिया पर

मोहल्ला विकास योजना से जुड़ीं हुई महिलाओं द्वारा दियों में कलर का अवलोकन करती हुई इंटर्न दक्षा शर्मा और सुरभि देवनाथ

शेयर की गई है। महिलाओं में यह इच्छा है कि घर के परिवार के साथ में अन्य कोई कार्य कर सकें जिससे उनकी स्थिति मजबूत हो। समिति का लक्ष्य 360 डिग्री जो वाकई बुंदेलखंड के सामाजिक उत्थान को पूरा करता है। यह परियोजना महिलाओं, बच्चों और नौजवानों के लिए महत्वपूर्ण है।

महिलाएं आगे आई हैं। पहले जो महिलाएं बीड़ी बनाने का कार्य कर रही थी। गोबर दिया परियोजना के जरिए उनकी आय कई गुना बढ़ी है। इस परियोजना से केवल आर्थिक मदद ही नहीं हो रही बल्कि प्राकृतिक संसाधनों को बचाना भी शामिल है। यह परियोजना कई मायनों में बहुउद्देशीय दृष्टि से लाभकारी है। विचार समिति में इंटर्न दक्षा शर्मा एवं सुरभि देवनाथ ने सभी परियोजना का आकलन कर केस स्टडी की।

स्व-सहायता समूह सशक्तिकरण

सामाजिक रूप से महिलाओं की भागीदारी की सुनिश्चिता पर अभी भी एक प्रकार से महिलाएं पुरुषों पर निर्भर हैं जैसे उन्हें कहीं जाना, खरीदारी करना, सामान्य निर्णय लेना, उनके कार्यों को एक हद तक ही सीमित कर दिया गया है, जैसे खाना बनाना, बच्चों की परवरिश करना, बड़े बुजुर्गों का ध्यान रखना आदि।

हमारे लिए सबसे बड़ा विषय है कि महिलाओं के उत्थान के लिए कौन-कौन प्रयास किए जाएं? हमारे सामने यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है? इसके लिए सरकार द्वारा स्वयं सहायता समूह की एक बहुत अच्छी परियोजना है क्योंकि इसके शब्दार्थ में 'स्वयं के द्वारा स्वयं का सक्षम होना है'। इस समूह की संरचना में 12 से 15 महिलाएं मिलकर किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए समूह संरचना बनाती हैं। जिसमें सामान्य बचत, नियमित बैठकें, आपसी सांझाकरण आदि। महिलाओं की सामान्य आदतें बचत के मामले में यह होती है या तो वे चावल के डिब्बे में, आटे के डिब्बे में या किसी अन्य जगह पर पैसों को रखती है। हां यह बचत का एक अच्छा तरीका है लेकिन क्या इससे उन पैसों में कोई वृद्धि होने वाली है, शायद नहीं? लेकिन बैंक उन पैसों पर ब्याज देता है साथ ही महिलाएं घर से निकलकर सामान्य बैंकिंग व्यवहार के बारे में, बचत कैसे करें, ऋण कैसे लें, उसको कैसे चुकाएं, शासन की

स्व-सहायता समूह की महिलाओं को जागरूक करते हुए इंटर्न आशीष ठाकुर।

नई योजनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करती हैं।

इस प्रकार हम उन्हें जागरूक कर रहे हैं कि वह समूह के माध्यम से बचत खाता खोलें, नियमित तौर पर राशि जमा करें। कुछ महीनों में यह राशि एक बड़ा स्वरूप धारण कर लेगी जो किसी नए उद्योग शुरूआत करने एवं कठिन समय काम में आ सकेगी। इस तरह महिलाएं आर्थिक रूप से समर्थ होगी साथ ही उन्हें सामाजिक रूप से समान भागीदारी मिलेगी। उनके योगदान को निश्चित तौर पर महत्व मिलेगा। यह महिला सशक्तिकरण एवं महिलाओं के उत्थान में सहयोगी होगा। समिति महिलाओं के बनाये उत्पादों को स्वदेशी वस्तु भंडार के माध्यम से बाजार में उपलब्ध करवाने कार्य कर रही है। जिससे उनमें आत्मविश्वास के साथ कुछ करने का साहस उत्पन्न हो सके। इंटर्न आशीष ठाकुर समिति द्वारा संचालित 16 स्व-सहायता समूहों पर कार्य किया है।

गोमय दिया परियोजना का आकलन

आज के समय में रोजगार सबसे बड़ी समस्या है। जिसका एक बड़ा कारण लघु उद्योगों का नष्ट होना है। इस समस्या से निपटने के लिए स्थानीय संस्थानों को मिलकर प्रयास करने चाहिए।

इस क्षेत्र में विचार समिति द्वारा चलाए जा रहे गोबर दिया परियोजना के प्रभाव एवं आकलन में इस स्थिति को समझने की कोशिश की गई कि यह परियोजना समाज के सभी तबकों तक प्रभाव डाल रही है या नहीं? लाभार्थियों के जीवन में इसके माध्यम से क्या बदलाव आए? कार्य अवधि में गोबर से दिया बनाने वाली महिलाओं के प्रत्यक्ष साक्षात्कार के लिए सामूहिक एवं व्यक्तिगत स्तर पर लिए गए जिसमें सभी छोटे-बड़े तथ्य सामने आए।

गोमय दियों के माध्यम से महिलाएं घर बैठे ही रोजगार पा रही हैं। साथ ही लोगों की जीविकोपार्जन के साथ किसानों के लिए भी लाभदायक है। इस परियोजना में यह क्षमता है कि यह पूरे देश के लिए उदाहरण बन सके। मोहल्ला विकास पर पवन चव्हाण कहते हैं, विकास एक बहुत ही उलझी हुई जटिल

महिलाओं को विचार समिति की परियोजना समझाते हुए इंटर्न पवनकुमार चव्हाण

प्रक्रिया है क्योंकि किसी भी एक आयाम के कमजोर रह जाने से वह अधूरा ही कहा जा सकता है। इस प्रक्रिया में सरकारों के साथ संस्थानों एवं समाज का भी योगदान होना चाहिए तभी यह संभव है।

विचार की दृष्टि से अगर समाज सामूहिक बुद्धिमत्ता के साथ कार्य करे तो बहुत से उत्तर मिल सकते हैं। समिति की परियोजनाओं में वृक्षारोपण, समाज के लिए, शिक्षा, स्वास्थ्य के साथ समाज स्वयं सक्षम हो सकते है। यह प्रणाली अपने आप में अलग ही है इसे धरातल पर उतारना काफी सराहनीय है।

इंटर्न पवनकुमार चव्हाण गोबर दिया परियोजना के तहत प्रभाव एवं आकलन तथा मोहल्ला विकास परियोजना पर रिसर्च कर रहे हैं।

निःशुल्क स्वास्थ्य कार्ड एवं जागरूकता

विचार समिति एवं मेरा अधिकार पोर्टल के संयुक्त तत्वाधान में स्वास्थ्य कार्ड निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दे रहे हैं। यह पोर्टल लोगों को सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने में सहायता करता है। साथ ही योजनाओं की जानकारी के साथ-साथ इस पोर्टल के उपभोक्ताओं के लिए मतदाता कार्ड, ईश्रम कार्ड, स्वास्थ्य कार्ड, जैसे महत्वपूर्ण पत्रों का निर्माण कर सकते हैं। मेरा अधिकार पोर्टल के माध्यम से 303 से अधिक लोगों का स्वास्थ्य कार्ड बनाया जा चुका है।

तुलसी नगर एवं भगवानगंज मुहल्लों में स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता के लिए स्वास्थ्य कार्ड बनाने के लिए जानकारी देना। मेरा अधिकार पोर्टल के माध्यम से स्वास्थ्य कार्ड बनाने पर कार्य किया गया। साथ ही यह जीवन में जिस तरह शिक्षा और रोजगार एक अहम हिस्सा है, उसी तरह लोगों के लिए स्वास्थ्य भी एक अति आवश्यक महत्वपूर्ण पक्ष है। अगर सही समय पर उपचार मिल जाता है तो रोग को पहले ही कई मायनों में खत्म किया जा सकता है। स्वास्थ्य कार्ड के माध्यम से लोगों को सरकारी योजनाओं की जानकारी मिलेगी। मोहल्लों में जागरूक करते समय हमें हर व्यक्ति को उनकी समझ बढ़ाने और खुद को जानकारी के लिए जागरूक करने में समिति की अहम भूमिका रही।

महिलाओं का निःशुल्क स्वास्थ्य कार्ड बनाते हुए इंटर्न विपुल तिवारी, शिवं कुमार तिवारी, चंद्रशेखर वी. भिसे।

हमारे समाज में खासकर महिलाओं और लड़कियों को समग्र विकास की भूमिका समझना अति आवश्यक है। रोजगार के साथ, स्वास्थ्य भी इस प्रक्रिया की मुहिम के मूल में है। जिसमें सरकारों द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनाएं चलाई जा रही हैं, लेकिन पर्याप्त जानकारी के अभाव में अभी तक जमीनी स्तर पर महिलाओं तक कम ही है। समिति द्वारा मेरा अधिकार के माध्यम से स्वास्थ्य कार्ड बनवाया जा रहा है। जिससे उनके स्वास्थ्य संबंधी जानकारी तैयार होगी। वर्तमान एवं भविष्य में भारत सरकार द्वारा चलायी जा रहीं योजनाओं का लाभ ले सकेंगे। आर्थिक पक्ष के साथ उत्तम स्वास्थ्य, सशक्त, मजबूत भारत की अर्थव्यवस्था को सहयोग करने में लाभदायक होगा। यह स्वस्थ भारत- सशक्त भारत की मुहिम को जीवंत बनाता है।

इंटर्न विपुल तिवारी, शिवं कुमार तिवारी, चंद्रशेखर वी. भिसे निःशुल्क स्वास्थ्य कार्ड एवं जागरूकता पर कार्य कर रहे हैं।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्रों की एक माह की इंटर्नशिप हुई पूर्ण

संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने इंटर्नशिप कर रहे छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र दिए।

समिति द्वारा समर इंटर्नशिप कर रहे छात्र-छात्राओं का एक माह का प्रशिक्षण पूर्ण होने पर समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समिति संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने सभी छात्र-छात्राओं का उत्साहवर्धन करते हुए शुभकामनाएं दीं।

समापन समारोह परिचर्चा में छात्रों ने एक माह कार्य अवधि के मोहल्ला विकास परियोजना, गोमय दिया परियोजना आदि पर छात्रा दक्षा शर्मा, सुरभि देवनाथ, विपुल तिवारी, शिवं कुमार तिवारी, पवन चव्हाण, आशीष ठाकुर, चंद्रशेखर ने अपने विचार महत्वपूर्ण बिंदुओं पर मत रखें।

पवन चव्हाण ने लोगों को स्वास्थ्य से संबंधित आ रही समस्याओं से अवगत कराया। समिति संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने संज्ञान लेते हुए एक मॉडल बनाने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने कहा सभी की पहली प्राथमिकता उत्तम स्वास्थ है। अगर लोगों को सही समय पर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हो जाती हैं तो सभी लोगों को काफी लाभ होगा। अधिकांश लोग सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं में बारे में जागरूक ही नहीं है, योजनाओं का पता है भी तो कैसे उनका लाभ लेना है। इसके बारे में ज्ञान ही नहीं है। विपुल ने गोमय दियों को विभिन्न स्थानों तक जानकारी पहुंचाने पर जोर दिया। इस अवसर पर समिति कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने सभी छात्रों को बधाई दी। समारोह की अंतिम कड़ी में छात्रों को प्रमाण पत्र, गोमय दिया, गोमय धूपबत्ती भेंट किये।

एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह सीड बॉल की तीसरी वर्षगांठ

23 जून 2019 को सीड बॉल बीजरोपण किया गया था जिसने अब जंगल का रूप ले लिया।

जंगल और जल संरक्षण के लिए 23 जून 2019 को विचार समिति, दक्षिण वनमंडल व दैनिक भास्कर के संयुक्त तत्वावधान में 10 हजार लोगों ने राजघाट के कैचमेंट एरिया में 1 लाख 11 हजार 111 सीड बॉल का रोपण किया गया था। जिसकी तीसरी वर्षगांठ है। पिछले वर्ष इस सीड बॉल से 14 हजार 800 पौधे हो गए थे, जो अब और बड़े होकर एक जंगल का रूप ले रहे हैं। विचार समिति के संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने बताया कि मनुष्य एक दिन में लगभग 550 लीटर ऑक्सीजन ग्रहण करता है। एक लीटर ऑक्सीजन का मूल्य लगभग 20 रुपए आता है। प्रकृति व पेड़ पौधों से हम 21 से 22 हजार रुपए की ऑक्सीजन दिनभर में निःशुल्क लेते हैं। तो हमारा नैतिक दायित्व बनता है कि हम प्रकृति में पेड़ -पौधे लगाकर निःशुल्क मिलने की ऑक्सीजन का ऋण चुकाएं इसी सोच के तहत हमने यह करने का महाअभियान किया। समिति सचिव आकांक्षा मलैया ने बताया शहर की 65 संस्थाओं व विचार समिति के 125 मोहल्ला समितियों के परिवारों ने सीड बॉल निर्माण किया था। मुख्य संगठक नितिन पटेरिया ने बताया कि इस महाअभियान के लिए राहतगढ़ ब्लाक के मनेशिया गांव के लोगों ने मिट्टी तैयार की थी और किशनपुरा गांव के एक किसान ने खाद तैयार की थी। मार्गदर्शक श्रीयांश जैन ने बताया कि इस नवीन तकनीकों से पौधरोपण से होने वाले व्यय को तो बचाया ही जा सकता है साथ ही इससे पौधे भी जल्दी विकसित हो गए हैं। सीड बॉल से अब यहां पेड़ ही पेड़ नजर आ रहे हैं। चारों ओर हरियाली छा रही है।

विचार समिति के सहयोगी और समर्थक संस्थान

BENNETT UNIVERSITY
THE TIMES GROUP

IIMT
GROUP OF COLLEGES
Greater Noida • Meerut
— Aim For Excellence —

UPES
UNIVERSITY OF TOMORROW

POLICY RESEARCH FOUNDATION
PRF

Edu-Vitae Services
JOIN! LEARN! ACHIEVE!

Rotary

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
BANARAS HINDU UNIVERSITY

भविष्य की पुनर्कल्पना RE-IMAGINING FUTURES
TISS

O.P. JINDAL GLOBAL UNIVERSITY

भारतीय प्रबंध संस्थान रोहतक
INDIAN INSTITUTE OF MANAGEMENT
ROHTAK

STEP-AHEAD
Fellowship
Preparation-Support
MGNF, Gandhi Fellow, Urban Fellow, SBI Youth, TFI etc.

भारत विकास परिषद्
तमसो मा ज्योतिर्गमय
स्था. 1963

For HER Foundation

TECHPOSE

ISRN

learning initiatives for india

Intern Connect

मीडिया कवरेज

माहवारी स्वच्छता अभियान पर नेशनल कवरेज

"Lyvefresh ANANDA" is India's first National Network of NGO's promoting better menstrual hygiene across India - RD Times N...

Health & Fitness

"Lyvefresh ANANDA" is India's first National Network of NGO's promoting better menstrual hygiene across India

RD Times Nasi · 2 days ago · 0 · 1 minute read

Jigar K Parekh – CEO ABCD MULTIVENTURES & CHAIRMAN Lyvefresh Ananda And Nikita Gala Parekh– Co-Founder ABCD MULTIVENTURES and Training Director, Lyvefresh ANANDA With senior women officers of Mumbai Railway Police Launching the first Lyvefresh ANANDA workshop organized for 200+ Mumbai Railway Police women officers.

To create better menstrual hygiene for women's across India have become the need of an hour. After the first ever lockdown for more than 18 months across India, women and girls at rural areas faces tremendous shortage of sanitary pads during the lockdown, creating the need of sustainable, eco-friendly and reusable menstrual product other than sanitary pads i.e. Menstrual Cup.

There are several NGO's working towards promoting better menstrual hygiene by educating about Menstrual Cup but there is no standardised training content & systematic approach for the same. There are more than 100 small and mid-size companies trying to focus on sale of menstrual cup through online platforms but no company is trying to take the challenge for creating awareness with acceptance of the product by consumer.

Lyvefresh being a parent brand of ABCD MULTIVENTURES, Mumbai who is into manufacturing of Menstrual Cups have started with the first ever initiative called "Lyvefresh ANANDA" since January 2022 to create a National network of NGO's to promote better menstrual hygiene by providing every NGO member with Standardized training content, System driven approach, technology support, menstrual cup at subsidized prices and also the support to create CSR funds for the NGO's.

Lyvefresh ANANDA have successfully created workshops of Menstrual Hygiene Management (MHM) with Free distribution of Menstrual Cups in Mumbai for around 2200 Mumbai Police Women officers, 250 Railway Mumbai Police Women officers, 500+ adolescent girls across different orphanages across Mumbai. Now Lyvefresh ANANDA along with the partner NGO's i.e. Vichar Samiti at Madhya Pradesh, Green Impact Foundation at Karnataka would roll out similar training camps across respective states.

Understanding the importance of this initiative and looking forward for more guidance, Lyvefresh ANANDA is also creating Honorary Advisory Board with the help of their first board member and spokesperson Mr. Cletus Colaco – Sr. GM Market Development of Gulf Oil Lubricants India Ltd.

"Lyvefresh ANANDA" is India's first National Network of NGO's promoting better menstrual hygiene across India - Republic Ne...

"Lyvefresh ANANDA" is India's first National Network of NGO's promoting better menstrual hygiene across India

By RNI News Desk - June 29, 2022

Jigar K Parekh – CEO ABCD MULTIVENTURES & CHAIRMAN Lyvefresh Ananda And Nikita Gala Parekh– Co-Founder ABCD MULTIVENTURES and Training Director, Lyvefresh ANANDA With senior women officers of Mumbai Railway Police Launching the first Lyvefresh ANANDA workshop organized for 200+ Mumbai Railway Police women officers.

To create better menstrual hygiene for women's across India have become the need of an hour. After the first ever lockdown for more than 18 months across India, women and girls at rural areas faces tremendous shortage of sanitary pads during the lockdown, creating the need of sustainable, eco-friendly and reusable menstrual product other than sanitary pads i.e. Menstrual Cup.

There are several NGO's working towards promoting better menstrual hygiene by educating about Menstrual Cup but there is no standardised training content & systematic approach for the same. There are more than 100 small and mid-size companies trying to focus on sale of menstrual cup through online platforms but no company is trying to take the challenge for creating awareness with acceptance of the product by consumer.

Lyvefresh being a parent brand of ABCD MULTIVENTURES, Mumbai who is into manufacturing of Menstrual Cups have started with the first ever initiative called "Lyvefresh ANANDA" since January 2022 to create a National network of NGO's to promote better menstrual hygiene by providing every NGO member with Standardized training content, System driven approach, technology support, menstrual cup at subsidized prices and also the support to create CSR funds for the NGO's.

Lyvefresh ANANDA have successfully created workshops of Menstrual Hygiene Management (MHM) with Free distribution of Menstrual Cups in Mumbai for around 2200 Mumbai Police Women officers, 250 Railway Mumbai Police Women officers, 500+ adolescent girls across different orphanages across Mumbai. Now Lyvefresh ANANDA along with the partner NGO's i.e. Vichar Samiti at Madhya Pradesh, Green Impact Foundation at Karnataka would roll out similar training camps across respective states.

Understanding the importance of this initiative and looking forward for more guidance, Lyvefresh ANANDA is also creating Honorary Advisory Board with the help of their first board member and spokesperson Mr. Cletus Colaco – Sr. GM Market Development of Gulf Oil Lubricants India Ltd.

Fabulous She

HOME · WOMEN ENTREPRENEURS · MOTHERHOOD · WOMEN AWARDS · ENTERTAINMENT · LIFESTYLE · BUSINESS · OTHERS

"Lyvefresh ANANDA" is India's first National Network of NGO's promoting better menstrual hygiene across India

by Team Fabulous She — June 29, 2022 in Health & Fitness

Share on Facebook · Share on Twitter

To create better menstrual hygiene for women's across India have become the need of an hour. After the first ever lockdown for more than 18 months across India, women and girls at rural areas faces tremendous shortage of sanitary pads during the lockdown, creating the need of sustainable, eco-friendly and reusable menstrual product other than sanitary pads i.e. Menstrual Cup.

There are several NGO's working towards promoting better menstrual hygiene by educating about Menstrual Cup but there is no standardised training content & systematic approach for the same. There are more than 100 small and mid-size companies trying to focus on sale of menstrual cup through online platforms but no company is trying to take the challenge for creating awareness with acceptance of the product by consumer.

Lyvefresh being a parent brand of ABCD MULTIVENTURES, Mumbai who is into manufacturing of Menstrual Cups have started with the first ever initiative called "Lyvefresh ANANDA" since January 2022 to create a National network of NGO's to promote better menstrual hygiene by providing every NGO member with Standardized training content, System driven approach, technology support, menstrual cup at subsidized prices and also the support to create CSR funds for the NGO's.

You may also like others' "SHE" posts

Yoga Nidhi Dr Lathashekhar holistic wellness centre

Sleep apnea leading to the risk of Head and Neck Cancer: Dr. Shalini Thakur, Consultant Head and Neck Surgical Oncologist, HCG Cancer Hospital, Bengaluru

Lyvefresh ANANDA have successfully created workshops of Menstrual Hygiene Management (MHM) with Free distribution of Menstrual Cups in Mumbai for around 2200 Mumbai Police Women officers, 250 Railway Mumbai Police Women officers, 500+ adolescent girls across different orphanages across Mumbai. Now Lyvefresh ANANDA along with the partner NGO's i.e. Vichar Samiti at Madhya Pradesh, Green Impact Foundation at Karnataka would roll out similar training camps across respective states.

Understanding the importance of this initiative and looking forward for more guidance, Lyvefresh ANANDA is also creating Honorary Advisory Board with the help of their first board member and spokesperson Mr. Cletus Colaco – Sr. GM Market Development of Gulf Oil Lubricants India Ltd.

Top Stories

House of Tuhina uplifts women artisans across the country

Jyoti Saxena Steals The Show With Her Stunning Walk As A Show Stopper For Ace Designer Kajal Agarwal

"Lyvefresh ANANDA" is India's first National Network of NGO's promoting better menstrual hygiene across India

Categories

BEAUTY
BEAUTY PAGEANTS
BLOGGERS AND INFLUENCERS
BUSINESS
EDUCATION
ENTERTAINMENT
FASHION
FOOD & RECIPES
HEALTH & FITNESS
LIFESTYLE
MOTHERHOOD
NATIONAL
PREGNANCY
SHOPPING
SOCIAL WORKERS
SPORTS
START UPS
WOMEN AUTHORS
WOMEN AWARDS
WOMEN EMPOWERMENT
WOMEN ENTREPRENEURS
WOMEN POLITICIANS
WOMEN SCIENTISTS

@republicnewsindia

"Lyvefresh ANANDA" is India's first National Network of NGO's promoting better menstrual hygiene across India

2d · 33 shares

To create better menstrual hygiene for women's across India have become the need of an hour. After the first ever lockdown for more than 18 months across India, women and girls at rural areas faces tremendous shortage of sanitary pads during the lockdown, creating the need of sustainable, eco-friendly and reusable menstrual product other than sanitary pads i.e. Menstrual Cup.

There are several NGO's working towards promoting better menstrual hygiene by educating about Menstrual Cup but there is no standardised training content & systematic approach for the same. There are more than 100 small and mid-size companies trying to focus on sale of menstrual cup through online platforms but no company is trying to take the challenge for creating awareness with acceptance of the product by consumer.

मीडिया कवरेज

दैनिक भास्कर

सागर 05-06-2022

आज विश्व पर्यावरण दिवस

150 किस्म के 9000 पेड़-पौधों से आबाद मंगलगिरी की बंजर पहाड़ी

सागर | मंगलगिरी में धीरे-धीरे तैयार हो रहा है जंगल। **इनसेटः** पहले ऐसी बंजर थी पहाड़ी।

सागर | शहर के नजदीक मंगलगिरी पहाड़ पर लगभग 7 एकड़ का इलाका जो कभी पथरीली बंजर जमीन था, वह आज हरे-भरे उपवन का रूप लेता जा रहा है। इस प्रकृति पथ पर करीब 150 किस्म के 9000 पौधे लगे हैं। इनमें 4 वर्ष पूर्व 7500 पौधे रोपे गए थे और 11 महीने पहले मियावाकी पद्धति से 1500 पौधे लगाए गए। खास बात यह है कि इन 9000 पौधों की बच्चों जैसी देखभाल की जाती है, जिसका परिणाम यह है कि सभी पौधे जीवित हैं। विचार समिति के संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया द्वारा स्थानीय लोगों को इस मुहिम से जोड़ने के लिए पौधे दिए गए और एक पौधा अपने पूर्वजों की याद में रोपण करने की प्रेरणा दी। लोगों ने इस मुहिम में सहयोग दिया। 4 वर्ष पहले रोपे गए पौधे आज वृक्ष के रूप में 3 फीट से 20 फीट की ऊंचाई पर पहुंच गए हैं। वहीं मियावांकी पद्धति से रोपे गए पौधों ने 11 माह में ही 12 फीट की ऊंचाई ले ली है।

॥विचार समिति॥

(स्थापना वर्ष 2003)

निवेदन

आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक मात्रा में दान देकर इस मुहिम को आगे बढ़ाने में सहयोग करें।

दान राशि बैंक खाते में डालने हेतु जानकारी इस प्रकार है।

Bank a/c name- VicharSamiti

Bank- State Bank of India

Account No.- 37941791894

IFSC code- SBIN0000475

Paytm/ Phonepe/ Googlepay/ upi

आदि दान करने के लिए नीचे दिए गए

QR कोड को स्कैन करें.

- संपर्क -

Website : vicharsanstha.com

Facebook : Vichar Sanstha

Youtube : Vichar Samachar

Ph. No. : 9575737475, 9009780042, 07582-224488

Address : 258/1, Malgodam Road, Tilakganj Ward, Behind Adinath Cars Pvt. Ltd, Sagar (M.P.) 470002